बिक्रमजीत नूर

ई—मेल-bikramjitnoor@gmail.com

डर

वह बड़ी मस्ती से खुली सड़क पर स्कूटर भगाए जा रहा था कि कुछ अजनबी लोगों ने उसे रुकने के लिए हाथ का इशारा किया।

स्कूटर तो उसने रोक लिया, मगर घबराहट के कारण उसका दिल धक- धक करने लगा। जुबान सूख गई और आंखें पथरा सी गईं।

दाईं तरफ एक मारुति कार खड़ी थी जिसके पास दो और आदमी मौजूद थे।

उसने देखा कि कार खराब हो गई थी और उनमें से एक व्यक्ति ने उसके साथ स्कूटर पर गाँव तक जाना था, किसी मकैनिक इत्यादि का प्रबन्ध करने के लिए।

उसकी सांस में सांस आई। चेहरे पर मुस्कान फैल गई। व्यक्ति को साथ के गांव में छोड़ने पर वह आदमी अपनी घबराहट पर हंसने लगा।

अभी वह दो चार किलोमीटर ही चला होगा कि उसे एक आदमी हाथ में ब्रीफकेस लिए चलता हुआ दिखाई दिया। अवश्य ही इसको अगले गांव जाना होगा, इसको स्कूटर पर चढ़ा लेना चाहिए।'

आदमी के निकट पहुँच कर उसने एकदम ब्रेक लगाई। आदमी पूरी तरह कांप गया।

"आप को साथ के गांव में जाना होगा, आओ बैठो स्कूटर पर।" उसने बहुत ही नरम भाव से कहा, पर ब्रीफकेस वाले आदमी ने अच्छी तरह से उसकी तरफ देखना भी नहीं और जल्दी से पीछे होकर खेतों की तरफ भाग गया।

हिन्दी अनुवाद : जगदीश राय कुलरियाँ

बिक्रमजीत नूर पंजाबी लघुकथा के मुख्य लेखक हैं। : अब तक इनके पंजाबी में दस लघुकथा संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। इन्होंने कहानी, उपन्यास इत्यादि की पुस्तके / भी लिखी है और लगभग दो दर्जन पुस्तकों का संपादन संपादन किया है। येह-सह'मिन्नी' पत्रिका के संपादन कार्य से भी जुड़े रहे है और कुछ पुस्तकों का अनुवाद भी किया है।